



॥ १ ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥ १ ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥ १ ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥ १ ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥ १ ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥ १ ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

विदुः स्यात् ॥ १ ॥ विदुः स्यात् ॥ १ ॥ विदुः स्यात् ॥ १ ॥
 विदुः स्यात् ॥ १ ॥ विदुः स्यात् ॥ १ ॥ विदुः स्यात् ॥ १ ॥
 विदुः स्यात् ॥ १ ॥ विदुः स्यात् ॥ १ ॥ विदुः स्यात् ॥ १ ॥
 विदुः स्यात् ॥ १ ॥ विदुः स्यात् ॥ १ ॥ विदुः स्यात् ॥ १ ॥
 विदुः स्यात् ॥ १ ॥ विदुः स्यात् ॥ १ ॥ विदुः स्यात् ॥ १ ॥

विष्णु

सुमङ्कयविषयविपूजा श्रवणद्वयविशालथीसफयविपूनिगारुव
जवाधिर्मननल्लरहाउकुर्त॥ ध्रु ॥ «ॐ» ॥ १ नागरोचवि॥ निभी
नाविचउषधीऊलसनाबद्धमध्यागतकादिष्टननादनूपीश्ममी
वृषलिङ्गललिताघ्ननगभामिनिलनिलसहगापञ्जनीनूपी॥ ध्रु ॥
ॐ नमामिदेवीं श्रीवज्रविद्या सिङ्ग उग्राय हवनधं ऊ समस्तानन्दवी २

डादियानवर्धुगिगिनिकामन्यवशीहृगः३विशुद्धमधुननि
 यन्ति॥ ॥वसुधैवकुलमस्यसमाहवतुल्यमाचक्रं॥यादृशदम
 संरागचक्रं त्रैलोक्यगिगिनदलकमलमहासूत्रचक्रं॥
 सनशीहृगकनाथ॥ ॥दहयिजिनविद्यादिनि
 नयारुदिनी॥सर्वस्यमनश्चननादनीयैर्द्रव्यैर्भादिद

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

सुखमिगानसुगानयज्ञनिजिनरुनदायनिविजयवि॥
॥दयनिनयगिनिवसुसनाजववडायम. अदिनिनिसस
मनंजवजदवात्रंजमंजमीमानुतुशयायलसना. दूय
मिनाशनमाकपुदा॥ २६॥ ७ ॥ ॥रागागगंधारिनिवि॥
॥रागाकदद. नयकृशानसूनयश्यकृशानयस. यचस

विजिया॥ ॥तुल्लदवीवमिलयविष्ठवनवीनात्रंवि
नंमनायकससयाजानद॥ ॥विजविजसज. सह
जाजानदुं कनकमनाकज. ददयाजानद॥ ॥यंज
वृद्धयकृशानमानुदुत्रं दवाजसूननलयमदिनदद
या॥ ॥उंजादुंजादुंखंखंवनकनिनंशुमजखलु

अभिज्ञान
८

द्यावि विवममात्रमनद्वि॥ ॐ स्वा॥ ॥ पठमं अभिज्ञान
लभनलजलमात्रमनद्वि॥ ॐ स्वा॥ ॥ पठमं अभिज्ञान
प्रज्ञाप्रसंगेपि विवममात्रमनद्वि॥ ॐ स्वा॥ ॥ पठमं अभिज्ञान
प्रज्ञाप्रसंगेपि विवममात्रमनद्वि॥ ॐ स्वा॥ ॥ पठमं अभिज्ञान
प्रज्ञाप्रसंगेपि विवममात्रमनद्वि॥ ॐ स्वा॥ ॥ पठमं अभिज्ञान

मादिगहि, मूहसमक्षमं १२ मूहसमक्षमं सर्वदेववज्रमात्रमनद्वि॥ ॐ स्वा॥ ॥ पठमं अभिज्ञान
प्रज्ञाप्रसंगेपि विवममात्रमनद्वि॥ ॐ स्वा॥ ॥ पठमं अभिज्ञान
प्रज्ञाप्रसंगेपि विवममात्रमनद्वि॥ ॐ स्वा॥ ॥ पठमं अभिज्ञान
प्रज्ञाप्रसंगेपि विवममात्रमनद्वि॥ ॐ स्वा॥ ॥ पठमं अभिज्ञान
प्रज्ञाप्रसंगेपि विवममात्रमनद्वि॥ ॐ स्वा॥ ॥ पठमं अभिज्ञान

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

सयवन्नन कादिगल सयमावृत्तगियसंहावा ॥ ६
१ वागललिन ॥ अनुरुजतधगावकावरीगाव जलनूपवि वि
विश्वकलमं १ उं आ ४ कं का अवर्जमृगमूदक मृग शोधि ग ह्ना
नमृतया ॥ ६ ॥ च दामृग प्रह्लावा धिरुलदायकं सर्वजिनय
पिन सहजक स मं १ उं आ ग म ल ६ म वि तं मृग्यक न दम रु व

समाननाहन विवकनूप ॥ वज्रयजमानमव ग भविसय
क हाव स लक्ष विनं यं वपियू १ कं का वम न पृथग्भा व कं व
जस ह्नापिन विपाक क ल हं ॥ ॥ घटम ल क य स फ नृप
राव आ क रु म द्या कि नि रु व नृप १ म टि नि सा धा व र्ण द व ना च व
हान स च मा नि य ह्ना वि रु कि ल हं ॥ ॥ पाश्यादि शा च म र्ण

रक्तव
ॐ
३

दानपूर्वपुनर्मर्त्य मया च कं यव द्विगं विमदकल्लर्धं मदाया
ह्युद विरयय विविह रूप समयसुखहानव कुत्र कित्त
ॐ ॥ **बाग नाठ** ॥ गाल जटि ॥ नक वरु नि निशायन
दलि ॥ मृष्टागदही उऊपह नहा किन ॥ ६ ॥ ॐ ॥

उक्तद विवात्र निमहा माम की दवी १ जगत्प मादि २ म
यनसूत्रा ॥ ॐ ॥ आगमवदनपू नानवधान २ आग धन
मदिन गुनू उदय दहा ॥ ॐ ॥ पंचवद्वस्य नूय य उक्त
सया लजा गनि मा म्प हनू व उह नू व ॥ ॐ ॥ जगत्प

२५४
३१

नृचत्रधिप्रगमधप्रियाश्चनयित्रीवाकुवज्रसूना
सूत्रपि॥ ३॥ ॐ॥ **॥ वागारुनवी॥** नमः ४ हं भूका
मूलरूपधनृश्चक्रविसत्यउनाधनृ॥ ॥ गन
० हं हं नना हं हं नना गन हं हं हं ॥ ॥ इदमाशि

५
५
५
५
५

गनयागधनृश्चक्रयधमूडाधनृ॥ ॥ धवचभु
सैखनदरुधनृश्चक्रयधमूडाधनृ॥ ॥
मायादहं विनजगं १ स्वहियकनृगसत्यमहं ॥ ॥
॥ वागारुनवी॥ ॥ विचक्रवविधमिभुसमाप्य

धिनित्वा न च मन्त्र निश्चया शं वज्र वाजाहि आलिंगनम
स्वत् नानाजसिमहा ह जा ॥ ॐ ॥ न नार्द्रं द्रं
न नार्द्रं द्रं ॥ ॐ ॥ निजवर्धुवर्धुवर्धुवर्धु
मन्त्रनिश्चयः यत्नमाज्जन च मन्त्रनिश्चया शं वि श्ववज्र

वृद्धवचननामकनटकाजी हाउआर वनम् साहि
ता ॥ ॐ ॥ वज्रयक्षु गजवर्धु मन्त्रवर्धुवर्धु
विजमाज्जन च मन्त्र निश्चया शं कनिकया लयवर्धुवर्धु
साहि मन्त्रवर्धुवर्धु मन्त्रवर्धुवर्धु ॥ ॥ दिग

विदिगकाकाभादिजमगाकिनिदवि. सजाआन
दममगिदवात्रेनमामिस्थीयकसंमवा. सनरुव
वजन. ज्ञानाधिना॥ ॐ॥ ॥**वागकनडि॥** दि
हंदावाययिजागिनि. ददकवादिद्रं कमजकमिद

कमविषात्र॥ ॐ ॥यागिनिगुक्कविष्. खनर
नजिवयिरतोवामद्ववित्र. कमजसयीवयि॥
ॐ ॥कयद्रयागिनि. वयनजायद्रमनिक्रव
हियात्र. उदियाचमायि॥ ॥सासुखत्रयाका

॥ द्वादशकुञ्जयामि. चावि वव्वदन्न श्रनिम सहव
 गगधकुशलिना ॥ ॐ ॥ श्रगामवैभन ॥ जयं वाक्
 ह्रुववद्यवयि त्रं सयवसूत्रासव. जगनउधवनि ॥
 ॥ नरुगवनियादूकामनमहि. मधुल. महलवृषं

पनकावात्रेदादमहा उज्जरवनविशुविन. मयव
 धयउवावा. निनिनिनिनिनयनिनिनयना ॥

॥ कवनिययव. गिवजोदनवठिवमात्रेकवि
 खद्योप्रमककेगा ॥ १ ॥ गिवससिधव. कंडव.

॥ इति श्रीमद्भगवद्गीतासु ॥

सूत्रं नवदशः ॥ अथ श्रुतिनासा ॥ अथ श्रुतिनासा ॥ अथ श्रुतिनासा ॥
॥ अथ श्रुतिनासा ॥ ॥ अथ श्रुतिनासा ॥ ॥ अथ श्रुतिनासा ॥ ॥
॥ अथ श्रुतिनासा ॥ ॥ अथ श्रुतिनासा ॥ ॥ अथ श्रुतिनासा ॥ ॥

अथ श्रुतिनासा ॥

॥ अथ श्रुतिनासा ॥

अथ श्रुतिनासा ॥ अथ श्रुतिनासा ॥ अथ श्रुतिनासा ॥

अथ श्रुतिनासा ॥

॥ अथ श्रुतिनासा ॥

अथ श्रुतिनासा ॥ अथ श्रुतिनासा ॥ अथ श्रुतिनासा ॥

बविद्युहं ना॥

॥ वक्ररुलिरुलमद्यनासन्नदर्थ
यसनसविनाशदशानिपीठिबधन, सद्यकिन्नधरय
रुना॥

॥ विविधिवलज्जुतबधरुषिन, दिथजन
मा ली १ उगन वाकि न सर्व संपानि, सिद्धि वृं पु सादा के॥

२०३१॥

१ गगनरुलवि॥ अडगमभान, जिलसरुका, यूलिनमद्या
बक्रकनागम वासकिनागम, गकिन्नमद्या १ गगलमभ
जुध्वक रुका॥ ॥ १ उगमजलजक्ररुनवादिवा
य वाक स, दिगं विदिगं वलिदवधि न १ अरुमभान

कृषिं विप्रश्च न नावयि सरुजा नद ॥ ॥ कं क
निद्या ना वलि गमया क्रा नो कला कं क्रा न कना ग न क
नं करे न वा वलि क मया स न स जना ग न न ट क्रा ॥
॥ अ इ इ हा सा षं ष या ह ना ग म य व ट म द्या व

रि क म हि न द ह द ल मी वा ना क जं ग ट क्रा द र्धि न म
या म द्या य आ ॥ ॥ द्या न म म ना य क्रा टि व
क्रा पु न म ना ग म य व न म द्या श कि लिं कि लिं वा वा
अ ई न ट क्रा क लि क ना ग म व व न म द्या ॥

७

२७२ विविध विधि

दादशरुजा दादशरुवना जयव मावदना दादश
नयना प्रहनयिक ध्रुवा जयव मावदना काल गानि
सीप्र वापयवदना ॥ ३३ ॥ **वागकामाजा ॥**
जु वनिनिहिङ्गा ननिल समद ला प्रक कल गिनय

जान

निरिव मवदना ॥ ॥ गना हं हं गना हं हं
गना हं हं हं गना हं हं हं गना हं हं हं ॥ ॥
विधिन चनद्र निशा निमरा प्रयागरव हं चालि निरु
वननाथ ॥ ॥ रु निरु लव मा हं हं हं हं हं हं हं हं

१८ श्रवनि निरु वास आन

मालविष्णुशनिः सफुराय रुवक्षः॥ ॥ विविदि
गन्धनमोलि जलमदला प्रका ग न वि वा की न वल
ह लदाय के ॥ ७ ॥ पूर ॥ राजा गरवर्क माल
श्च निनिदिन वामजानू खम्ब कि बक्ष माल

गोसा १ जागद्धवसा दवंदि अवसा गिरुवनन्या
या प्रचलविना ॥ ॥ नमामिह्री वधमहा
आवठम, इवमृकु हयकादिना प्रविश्व नाथविश्व
यिन, त्रिभंदि कममहा काथिनाया ॥ ॥ श्रीगिरि

षनागाः उच्यन्ते यदा ह्यस्य कर्माणि विदुर्नितिकि ब्रह्म
विष्टिर्न पुरजः ककलनयधमः वलीसंतासा जायदस
जना ॥ ॥ माधुजमाया यत्र जत्र जत्रा मोदयि
सा वायाय वरलना २ समय समाया नगरिमाहाः

हानमायासमाहिदेहा ॥ ॥ जलारजधायकः
निनमोली कयलनयत्र ननं फनं काला २ सवनजना
थ वंदिनय ब्रह्म जायसु ब्रधल प्रवजविला ॥ ॥
रवागरेलीव ॥ गऊजिन उच्यं लथधलिया कमज कलि

सः अग वाति ३७ म नू क ल गि क नाला गि नु ला वाम
षट्ठांग कया बधे वा ॥ ३ ॥ श्री संभव वाया वाह लि
गु क्त ऊ गु ना न मा न वि वा य यिया न माया सा शु र
व गु मू डा सि धि वा ॥ ॥ या भ व क्त म गु वाम द्वा थ

धनिया उ न ल सिल मा ला न नी ल श्री ग मा हि न क न का
र व व व मू ख अ गि वि न्ना ल धि ला ॥ ॥ अर्ति इ य
जा र यिल व वा द यिया न कालि वा गि वि ष मू डा न
वि ष क लि सः अ व व ड उ मा इ क या ध्र व मी ख र मू डा ॥

ब्रह्मालविचरदिया त्रंजकिनिदियनि च वसिक
वाजनिद्या तवेनात्रसंशासनी ॥ ॥ सिंधिनिद्या
विनिजवकउत्राकिनि स्वर्दाशयजभूत्रक भद रुक्म
त्रंजजकिनि धात्रवनालजकिनि चत्रात्रजकिनि

चक्रुजदवि ॥ ॥ दिनजननी दवीदाकिनि शरा
यायि सजन पंचमदारुलन विदुषिगात्रं वतं मरु
नक वज्रय नु ० स्वर्दाश यायवजमध्व ग्रीहानदवि

१७
चक्र
२७
३७
४७

१७ गगन उषि चक्रि कुल कठिना चक्रमंखलसह विग
गी वं नूदन वसिलमाला शसिल चक्रि चक्रि ययि यारुहम
विरुषिगगगधकना दिवधु विनाया ॥ ६५ ॥ उमयीरु
नूवदमात्रको नाया हागनाथयीसधनाया ॥ ६६ ॥

कयाठकहाथधयिया कथक्रियाडखदीगगंसीरुगना
गिनिकमलविहासीमहासखमचिनपसाद ॥ ६७ ॥ विज
वावाहिशालिगनसधननाचयिवरुविहवरं गशवाकवि
कामयिया किदकिरुव अघउवनरुलपसाद ॥ ६८ ॥

२२
२३
२४
२५
२६
२७

सहस्रसंष्टिलिययागावन्निकर्षपात्रीरुं नूवचययपसा
दशपक्षाश्रालिगनकिदन्निरुं नूव विवाहायिधुचक नूव ॥ २३ ॥
हमायनला ॥ मायाजा लविम्य बादसम मिनाइ माहमा
नवयि सादिल माया माहा ॥ ॥ ३ संसा नइ गरा
२ वागदव माह बादि च असा ॥ ॥ ३ नमिरन नय

हान्मादमहावलिष्टजा॥

॥समयाचक्रवृथा॥

दवाश्वाकालिचडमदनयमा॥

॥सिमवयकनंक

केशावलिष्टमलाप्रयस्त्रिकेनकसमाकलनयन॥

मादमहावलिष्टवनगयनश्मयसासमर्कवृथिव

अलागे॥

॥ ६६६ ॥

वामादहिन २५

एवमगीश॥ वामादहिन उदयिद्यनहीश्माग्राविनासपिमहासुख

द्रवयिया॥

॥ उजयिल जायिया सरुज ग्रानेदश्मयचविनास

यवयविशवव॥

॥ गयनमयनविरुविनायियाश्कायवाक

विरुनकलीया॥

॥ उयकधवयिआरुललयियाश्मावाय

ययान (गधधवादी॥

॥ पीवयिचवगुनूपायपसाईशूनयि

दवी नीलवदनी ॥ ॥ वायु घमादिनिदवीसिन
 वक्षुला २ पादि संवा गोक्षी दवीला नव वक्षुला प्राने अत्य
 मगुमिनी दवी रुजी नव वक्षुला २ दक्षिण त्रिदि का द
 विक्रमवक्षुला ॥ ॥ चतुर्भुज चकान नव वक्षुला रुज

२३
 गीत
 गीत
 गीत
 गीत

श्री २ सखविज संरुव नवलदिगं वजा ॥ ॥ ॥
 २ नागं अरुति ॥ हात आरु वक्षुला क्रियायि न संवल
 धनयिकवाजी नवसा २ रुक्मवा वल न मधुयाम न म
 कटकः अदिगं वजा ॥ ॥ न न न माव न सम्य न जा

या. समज सदजि मानको ला १ रु मविनाहि न वऊ वादि
रुउ मदि न मान सादा ॥ ॥ क्षान्ति होय न व न सरु
मयन कय न रुव पि न वा जा १ गगन गि जा वं धू वीदि न जा
दा. मजु म धु त रु निना ॥ ॥ शिर्ये व द्या न व रुदि

हान संमल पायि सयि धु चरु नाना १ रु मविनाहि न वऊ
वा नाहि रु म विरु ध मि अ धा ना ॥ ॥ गम वा नि नि ना व
ऊ ~~का~~ अनिय व न स न गु न व न ह आ ना थ १ स
मया आ न द रु नि ग्य ल म धु ल स म न व ऊ वा ना हि ॥ ११

[illegible]

५॥ पूजकपूजनाव नत्वत्वनाप्रवलिनाव ॥ ५३ ॥ स्वस्व स्वा

हिरवाहि वलिपुत्रले, यद्यद्याद्य विद्वन्पञ्चाष्टनस्य

पंचमालिः, पंचमालिः न सर्वनिना ॥ ॥ सर्वयक्रयाक्रस.रु

नयनोपेक्षमात्रापस्मावश्च कञ्चिन्निद्राय गृह्यसमञ्ज

न० मन्त्रलिङ्गकृतम् ॥ ॥ दानपतिस्तु कार्यमव्यास
वृक्षसंपत्तिसाधकश्च श्रयः। ये वक्तुं अथैषि वथ जि
ह्वयमाह कर्मथम् ॥ ॥ समयप्रक्रुद नपनि ल स
र्वसिद्धिर्लपदम्भक्तिः १ आर्यसाय गथागतवने सर्वसिद्धि
र्लपदवृद्धिः ॥ धर ॥ ॥ १ नागरुणवि॥ नाग्रुड मा

॥ दानप्रतिश्रुति कार्य मन्त्रया. स

वसुदेवं संपत्ति सा नृप २ य ए व न ए व उ अ ए पि व थ जि

॥समयवक्रकुदानपनिलसु

घसिद्धिर्हंपदम्भानि २२ आसंसात्र गथागनवने सच सिद्धि

सप्तद्विचित्र ॥ ४२ ॥ ॐ ॥ ११ गगनवात्रा नाना इन्द्र

॥ १ गगनरवि ॥ तपस्वि ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥

नमामि २ जिनेश्वरक लदक वदवमममि शालिगि ना
२ पंचज्ञानपंचधनुस्य नृपावृद्धधर्मश्रानयध्वना ॥ ॥
ननाहं ननाहं ननाहं २ जगत्सीता प्रदधालियामनो हव न
मास्तु २ पंचजिनेयध्वना २ पंचज्ञानपंचधनुस्य नृपा
वृद्धधर्म श्रानयध्वना ॥ धृ ॥ नमामि २ श्री धामनिपू

लेखनः प्राद्वि सिद्धि वचदायनिर्क २ इति गहवदा सर्वपाप
कर्मक वदानपूत्रः प्रहृभीकृपदा ॥ धृ ॥ नमामि २ धर्म
धनुर्वागीध्वनः पाठहाइ वा जयविमलितुना २ श्री उद्योगा
वनः मूनमूनका वा सर्वदेवव्यवसिद्धिना ॥ धृ ॥ नमा
मि २ वागीध्वनमगुलपद्मगि विनिनवासिना २ सत्यवि

२५
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

भाहिरु इष्टं विना हानं पदमामि तिन चक्रं ध्वना ॥ ६५
ॐ ॥ १ ॥ नमो निलवद ॥ अखय निल अश्न अखय अ नूपमग
गदो कमत्रक साधना शुभा ये विना सिन नायकी विद्या दवा
बाध विवृ सप्त अति ना ॥ ६६ ॥ नमामि निलानं रू नील
कृत्र ध्वराव ॥ हं उरु न धर्म पापि ना ॥ सत्र दस च सप्त म

अ
अप्रकाशिता अत्र अत्र च सप्त व्यापिता ॥ ॥ ६७ ॥ अत्र अत्र
वच साधित्र चक्रवर्ति मंत्र मधुलरु मयि नलिना २ निम
लरु दया चक्र ध्व विनं रु निमि कृत्र ल अत्र मय साधना
॥ ६८ ॥ अत्र काल चक्र श्री चक्र सप्त अत्र नरु काटि सि
धा पात्री गुरु श्री रुग डी दियान पूर्व गि निजा वध वि

ॐ श्रीगणेशाय नमः

पञ्चमहासखजानक ॥ धृ ॥ ॐ ॥ ॥ **नागकनठि** ॥
धीमश्रुनाथवच महाविनविजयाश्च पुहासखर्ध्मावि
नागवासदस्त्व ॥ ॥ नमामि शधीमश्रुकुमा नाश्च
गदिध्वनीजगन्गुपु उवनव्यापिना ॥ ॥ प्रकधावि
गुरूपमगु न्नाया शधीधर्मधुल्लान नपाल मउ ल

विष्णु

संकिरि ॥ ॥ **नागविद्या** ॥
विष्णुसदपदिता नीलजन ॥ धृ ॥ ॐ ॥ ॥ **नागविद्या**
सा ॥ द्विभुज चकमूरवचक वचवदन शनर्गनमस्तु कठि ॥
छिनिवाचना ॥ ॥ नमोदवी वृद्ध ठाकिनिविध्वजननि
शक्ति उवनव्यापिना जिनस्नानदायनि ॥ ॥ दहिनकव

वज्रविज्रासिगदग्न न श्वामकयाठक चतुमविष्टु पिवयि॥

॥ गत्रुलिमधुल्यमाप्य उदियालेगमना श्वत्तनोपत्र

वत्र, धातुगपवेधिता॥ ॥ श्रीविद्याध्वनीदवि, सत्रनत्रम

हि श्वक कृपादिसिद्धि, दहिभमागा॥ ध्र ॥ ~~ॐ~~

१ नागलजीगा उलगभरुनद श्रीविग, न नृसाहा २००

दुनील्यशक्तिपिठलक ६॥ ध्र ॥ जगनूकप्रकृपागुलद

वि॥ इष्टमासविद्युनाठानिदवि॥ ध्र ॥ त्रकनयनचिनित्र

पुल्येमासा श्वर्ग, कत्रकि, कपालनि लोत्पन॥ ध्र ॥ वा

युवमेव सत्ययातिगा श्वर्गबलकोदलभवाकना॥

॥ चमयसमनशी उ श गालनि मा गो १ रुनयि अ मा

जिनवद १५

द्ववडवलिना॥ ४३ ॥ **॥ ८८ गग वामविक ॥** जिनव
जगनय न उवन सीकापी न कनिवा म्भी जिनव न म्नीना
२ न पा ल म ७ ल मा म्भी म्भी ह न की न (६) जग न ना थ नू ह
य दा ना॥ ४३ ॥ विओ ग निग रिया न म्भी व गा न या न द व
पु ष मा मि वृ ग म ला क ध्व न द व २ सि द्वा जी गि व न्धू द रु प

विक मा ला या उ व न य नि चू ण म धि न न्धू द व ॥ ॥
वा णि क म ल वि का णि ग वा भि या न वाम क म ल ध न हा थ २ यु म्
ग म ल स ना द का णि दा पि दु इ ह ख रु य ह न धा ॥ ॥ हूँ हूँ
रु ग व नि का या रु ग व नि न म म्भी वृ ग म ला क ध्व न द व २ न मा मि २
मी न न्धू द व स्व र मि ध्वा ना ना न द व ॥ ॥ द ह रु मी द्वा पि

शुक्रमष्टिगदहा २ रावरुयदहनविषाजविषा ॥ ध्र ॥
 सकत्रविष्महन्निमनिपनिर्गम २ नकिपनिस्वगनिवासु
 ५ ॥ ध्र ॥ रावा रावकनहपनिर्गम २ अनूपमसुख
 समगनसुखचिह्ना ॥ ध्र ॥ ॥ ६३० ॥ रागनाठ ॥ कवननू
 लाकठवकडा ननूपवृद्ध २ सुखयनिर्लजनसयाव

[illegible]

नमो भि २ जिन धर्म धाम ३ ६३

इति नि उवननाथ चक्र संवन नाया ॥ धर ॥ 
१ नाग नाट ॥ नमामि शजिन धर्म धा उखय सु २ जि उवन
अनूरु न धर्म धा उवागी ठव न ॥ धर ॥ नमामि शजिन यक
जिन नमा सु २ दक्ष मि का वि म ग महा सुख नाया ॥ धर
स्वर्ग मध्य पाता न उवन श्री का पी ग न २ चक्र उवन गति

महा सु न नाया ॥ धर ॥ धर्म श्री मि उ झ न श्री मि उ २ न ना न
म उ न मा ज्ञा सु ना सु न पि ॥ धर ॥ वाम पूरु क ध न धी २ द
दिन रु रु स्वर्ग सि न ध ना ॥ श्री ला क ठ व न म सु ल महा सु
ख नाया २ ना जा भि ना ज श्री न न उ म सु द व ॥ श्री व ज
वा र्य व ड न आ वा र्य २ न न यि श्री वा क व ज च न च वि ना ॥ ६४

सध्वि ५५

१॥ वागवसक ॥ मध्विपुत्रिपुत्रा इयनिकलावा २॥ कलसद
ववदिगपाद ॥ ॥ मेडी आदिबूद्ध श्रीमत्तकमावा २॥ खंड
मृविबदिगपाद यमनृख्यद्वय ॥ ॥ कंकमनृविना सुनवि
लष्टषमान २३॥ आर्गहिन कबूदविहा ॥ ॥ विषम
विषमकलयावागमनस २३॥ विह्ववियापिन श्रीगुनस

三三三三三

[illegible]

नमो देवी, त्रिभुवनपवित्र्य ॥ ॥ कायमृदुदयिपास

नवविंशत्रागक्षमा माहवत्रनिनन्दे देवी ॥ ॥ सुवभा

ॐ देवी, नीलकनकदेवी शसनपाण्डे देवी सूर्यसंराव ॥

ॐ ह्रीं सावदेवी कुरुष्वकदेवी शमाक्रमार्गदेवी भावि

ॐ नमो नमि ॥ ६०० ॥ ॥ रागा नृगमत्रमासासि ॥ त्रिभुवन

कमलखनकवत्तु श्रमकूटकमदिगम्यवा ॥ ॥ गनार्क

हं गनार्क हं गनार्क गनार्क हं ॥ ॥ वामकवाटकदहि

नकत्रनिहातुग्राहचक्षुः (भारिगा) ॥ ॥ सूर्यमधुसू

माभ्यगाद्यवमूत्रनिश्चक्रमधिगविहृषिगा ॥ ॥ दग

ॐ कमुदव नमो वासासि

४९ वृद्धाग्निनी

गुनूचन (६) सिन्यगम धन्रिया १ वज्र वा नाहि दुशपाय
सन्ध ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ १ नागशृंग नमो नमि ॥ वज्रका गिनि रु
नूकनाया १ गुणुवन दहम पा (६) ॥ ॥ पिवयिमहान नम
महासुरवक्र नयिया १ वज्रदंती हू लिया नूनरु नमन ॥
॥ उद्धमालि, विदल कमलसं या (ग) १ दहि विनासाप

वनसरुदयि॥ ॥ तु यिं जे न द व महासूख शर्प च सिन
स. वीज वा नू लो॥ ॥ भगवत नूप भाद-चतुर्थ तिषक २
सान ध्वनी सी सा प्रसमूडा ॥ ६०:३१ ॥ ॥ १ बाग म्य उयी
दी विनि क्षत्र वध विनाश यिक यि स २ ड थ रु ना डा म थ ल क
यिसा॥ ६॥ रुजं का प्र मन ऊ ग न निवा सिया २५॥ ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

अमिय अमिय निर्वजन वाया २ सहज सुन्दरीया जिनरु
लय यिस ॥ ॥ उचउडागिनी चममममयिया २ वज
वावाहिआलिंगन वावि ॥ ॥ उधरुवाठा कनूहकवां
दस्य २ कुर्यकुर्य आलिंगन नीनावर्ह वावि ॥ ॥ ॥
नागवसन ॥ ॥ अगसिकसुमइति ॥ ॥ हपराखन २ विविधिन

तमसिमकूट विउषिगा ॥ ॥ नावेप्रथी अचनवीया २
ननाचउआनइविनासयि अचनया ॥ ॥ यामउराववि
मूमडादक्षना २ पक्षा आलिंगन अक्षयमहाहर ॥ ॥
विनागवउइति लवरयक्षना २ गस्यानिरुग खर्क गऊनीपा
हम ॥ ॥ मानवउनदप्य निखिनविद्युहं गा २ नावक्षमि

ॐ नमो भगवते

शगनगगधविनासमूचया॥ ॐ ॥ ध्रु ॥ **१ वागमः**
॥ नमो वदनयत्नमकटमालं कृताश्चतुर्भुजस्वर्णपूरकसज
धनधामि॥ ॐ ॥ नमो मिमंशुपीपमनृणध्वनाश्चयत्रम
सापविप्रविमडधामि॥ ॥ दहिनपीगनपनिवामश्रीमहा
काशाश्चगनमभुसमाश्रयकलिनहिता॥ ॥ ॐ ह्रीं ह्रीं

ॐ विष्णवे

नयाविश्ववियापिनाश्चक्षुषयवक्रव्याधिइविमरुता॥ ॥
वज्रध्वजपसादिप्रदासरुनयियाश्चतुर्भुजवदनामात्रसिद्धिवत्र
पसादा॥ ॐ ॥ **१ वागमः** ॥ विश्वयविश्वयविष्णुपवन
संज्ञागजात्रयिवश्रानाशिकमल्लश्चक्षुषयजिनविष्णुमनि
ध्वजयिसूत्रगजिननिनि ~~काशाश्चगनमभुसमाश्रयकलिनहिता~~ **धामासययी॥** ॥

नसंकासनदह॥॥ ॐ ॥ दवशीमक्रधार्षी रुवन व्यापिना
 शीघ्रस्वर्गधनदहिनकनध्वनि॥ ॐ ॥ वामपूरकधन
 सूरपुत्रनायाश्चमपकासकाशनदह॥ ॐ ॥ दहिनवाम
 कनधननूधनध्वनिगाश्चुवनमानदह्यवानपहात्र॥ ॐ ॥
 कगननपात्रनाथप्रमदिकदयाश्चुलिमकसखरुलवल

प्रसादा॥ ॐ ॥ ॐ०३० ॥ गुरु॥ सायासुसम्वत् २२२
 मिथेगुरुयाद्यादतिथिकुरु श्रीवजावार्यचउपासन
 थसकूलिकहिनियाधंवादडा दाश्यागवा याडावियाभुत
 शागतवावेवि॥ द्रंकावसंजातगुरुकदहृद्विद्वज्जकास्यं गिन
 गं॥ ॐ ॥ गनाद्रं२॥ ॥ वक्रिकुंशुवकंथिभार२२२२

६
 ११२
 कुरु

नयनवस्र ॥ २ ॥ मखल भोयूय पायलर
 यायनरस ॥ ३ ॥ जठमकूठ विम्वक
 २ ग क म धु म ॥ ४ ॥ तथैकलवज वाम्य
 र्थ २ रलव ॥ ५ ॥ कालि आ विधपय ॥ ६ ॥ रुंदा ॥ जय

गीद्विरुजसम्वर गिरुवनयापिगरमद्वितिविमूया
 सिधि ॥ ७ ॥ ॥

आशा नरदाथ
५४

ASMA ARCHIVES